मजदूरों का अपना कोई देश नहीं होता ।

दुनियां के मजदूरो, एक हो !

फरीदाबाद मजदूर समाचार

मजदूरों की मुक्ति खुद मजदूरों का काम है ।

दुनियां को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा ।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73

नई सीरीज नम्बर 35 | मई 1991 | 50 पैसे

मई दिवस

अमरीका में सितम्बर 90 से मार्च 91 के बीच 13 लाख मजदूर नौकरी से निकाल दिए गए हैं। रूस में मार्च में शुरू हुई कोयला खदान मजदूरों की हड़ताल सरकार द्वारा 12 महीनों में तनखा दुगनी करने के आश्वासन के बाद भी जारी है और अप्रैल में बड़ी संख्या में फ़ैक्ट्रियों के मजदूर भी हड़ताल में शामिल हो गए हैं। पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी के एकीकरण के बाद पूर्वी क्षेत्र में फैक्ट्रियां बन्द होने से जर्मनी के पूर्वी क्षेत्र के एक तिहाई मजदूर बेरोजगार हो गये हैं। अप्रैल में यूगोस्लाविया के सात लाख कपड़ा और इन्जीनियरिंग मजदूरों ने टैक्स घटाने, खान-पान की वस्तुओं के भाव स्थिर रखने और बिना कटौती के समय पर न्यूनतम दिये जाने के लिये हड़ताल की। मार्च-अप्रैल में हरियाणा में ईंट-भट्टा मजदूरों ने हड़ताल की, भिलाई औद्योगिक क्षेत्र की 50 फैक्ट्रियों में 11 अप्रैल को हड़ताल हुई ..... यह सब पूंजीवादी व्यवस्था के गहराते संकट के कुछ लक्षण मात्र हैं।

पूंजीवादी व्यवस्था के संकट और उसके गहराने का मजदूरों के लिये मतलब यह है कि पीढ़ियों के संघर्षों से जो हासिल किया गया है उसमें कटौतियों के लिए हर देश में पूंजी के नुमाइन्दों के हमले लगातार बढ़ते जा रहे हैं। कटौतियों का सिलसिला हर जगह और हर क्षेत्र में बढ़ता जा रहा है। यह एक व्यक्ति द्वारा दिन में आठ घन्टे काम से परिवार का भरण-पोषण यानि आठ घन्टे के कार्य दिवस की मांग थी जिसके लिए अमरीका के शिकागो शहर में हुए शानदार संघर्ष की याद में हम मई दिवस मनाते हैं, लेकिन आज परिवार के भरण-पोषण के लिए आठ घन्टे ड्यूटी के अलावा ओवर टाइम—पार्ट टाइम—परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा काम करना जरूरी हो गया है। कटौतियों के सिलसिले ने इस प्रकार आठ घन्टे के कार्य दिवस को बीस-पच्चीस घन्टे का कार्य दिवस बना दिया है और वह भी तब जबकि इन सौ साल में हमारे काम की रफ्तार कई गुणा बढ़ गई है। यह दुनिया-भर में हुआ है। यह किसी की मर्जी या शैतानी का सवाल नहीं है बल्कि पूंजीवादी व्यवस्था के गहराते संकट का एक लाजमी नतीजा है।

इसलिए मई दिवस का आज मजदूरों के लिये सबक यह है कि कटौतियों के खिलाफ संघर्ष तेज करें और सुधारों के भ्रम से छुटकारा पायें। पूंजीवादी व्यवस्था के गहराते संकट का इलाज पूंजीवाद को दफनाने में है। पूंजी को दफनाने के लिए क्रान्तिकारी मजदूर आन्दोलन का विकास आज मई दिवस का पैगाम है।

—o—

थॉमसन प्रेस में तालाबन्दी

फरीदाबाद स्थित 1700 मजदूरों वाली थॉमसन प्रेस भारत की जानी-मानी प्रिंटिंग प्रेसों में है। प्रोडक्शन सस्पेन्ड के नाम से 21 मार्च को इसमें किया गया लॉक आउट जारी है। मार्च महीने के जिन 21 दिनों प्रोडक्शन हुआ था उनका वेतन भी मजदूरों को मई के आरम्भ होने तक नहीं दिया गया है भूखे मार कर मजदूरों पर अपनी शर्तें थोपने की मैनेजमेंट की साजिश जारी है और चुप्पी, दिसम्बर 90 में आसमान सिर पर उठा लेने वाले पूंजीवादी तत्वों की पूर्ण चुप्पी इस साजिश में मैनेजमेंट की मदद करने के लिए है। मामले पर थोड़ा विस्तार से विचार करना थॉमसन मजदूरों के साथ-साथ अन्य मजदूरों के लिए भी उपयोगी होगा।

भारत में लिमिटेड लेबल वाली तीस बड़ी प्रिंटिंग यूनिटें इस समय बीमार हैं। थॉमसन प्रेस भी उनमें एक है पर यह अब तक इन्डिया टुडे के जोर से अपनी बीमारी छिपाती रही है। प्रिंटिंग पेशे से जुड़े कुछ माहिरों के मुताबिक थॉमसन प्रेस की इस बीमारी का बुनियादी कारण संचालन में गम्भीर गड़बड़ियों का होना है। लाटरी आदि छापने वाली सैक्यूरिटी प्रिंटिंग में बैंकों आदि के पैसे से करोड़ों रुपये की मशीनें लगाई गई हैं लेकिन न तो क्वालिटी में और न ही भाव में यह मार्केट में टिक पा रही है। उच्च तकनीक वाली मशीनें चलाने वाले मजदूरों को वेतन बहुत कम देना तो खैर थॉमसन मैनेजमेंट की पालिसी है।

छह-सात साल पहले बीमारी के लक्षण नजर आने पर थॉमसन के कर्ता-धर्ताओं ने छोटी-छोटी चोरियां करने वाले बिना डिग्रीयों वाले मैनेजरों को हटा दिया और उनके स्थान पर बड़ी-बड़ी डिग्री वाले लोगों को फैक्ट्री संचालन का काम सौंपा। बड़ी डिग्री वालों ने बड़े पैमाने के गड़बड़ घोटाले किये हैं और अपने करमों पर परदा डालने के लिए उन्होंने कम्पनी की बीमारी का कारण फालतू मजदूरों का होना घोषित किया। इलाज के नाम पर इन साहब लोगों ने बड़े पैमाने पर थॉमसन मजदूरों

(शेष अगले पेज पर)

पूंजीवादी विकल्प.....मजदूर विकल्प

जगह की कमी की वजह से इस सम्बन्ध में पिछले अंक में कुछ सामग्री छूट गई थी। और फिर, माहौल को देखते हुए कुछ बातें दोहराना भी उपयोगी रहेगा।

यह महत्वपूर्ण नहीं है कि इन संसदीय चुनावों के बाद किसी एक पार्टी की सरकार बनती है अथवा मिली-जुली सरकार बनती है। महत्वपूर्ण यह भी नहीं है कि संसदीय प्रणाली बरकरार रहती है अथवा राष्ट्रपति प्रणाली स्थापित होती है। पूंजीवादी व्यवस्था के संकट, विशेषकर भारत में हालात ने यहां पूंजी के नुमाइन्दों के लिए पूंजीवादी जनतन्त्र के स्थान पर पूंजीवादी एकतन्त्र की स्थापना को उनकी वर्तमान आवश्यकता बना दिया है। **इन संसदीय चुनावों से मात्र यह तय होना है : यहां पूंजीवादी एकतन्त्र की स्थापना पूंजीवादी जनतन्त्र का इस्तेमाल करते हुए हिन्दूवादी हिटलर करेंगे अथवा पूंजीवादी जनतन्त्र की नौटंकी को फौजी हिटलर हाल्ट करेंगे।**

रूस-पूर्वी यूरोप-चीन में पूंजीवादी एकतन्त्रों के खिलाफ उबलते असन्तोष को वहां पूंजीवादी तत्व पूंजीवादी जनतन्त्र के दलदल में धकेल रहे हैं तो भारत में पूंजीवादी जनतन्त्र के खिलाफ उमड़ रहे असन्तोष को भुनाने के लिए हिन्दुवादी हिटलर और फौजी हिटलर गोटियां बैठा रहे हैं। संकट पूंजीवाद के इस या उस रूप का नहीं बल्कि संकट सम्पूर्ण पूंजीवादी व्यवस्था का है। इस हकीकत के मद्देनजर आज दुनियां में कहीं पूंजीवादी जनतन्त्र की डुगडुगी तो कहीं पूंजीवादी एकतन्त्र की तुरही यही दर्शाती है कि पूंजीवाद के खिलाफ क्रान्तिकारी विकल्प इस समय दुनिया-भर में बहुत ही कमजोर स्थिति में है।

हमारे लिए महत्वपूर्ण बात, खतरनाक बात यह है कि भारत में मजदूरों की उल्लेखनीय संख्या स्वयं को असहाय मान कर पूंजीवादी जनतन्त्र में दमन-शोषण को झेलती रही है और आज मजदूरों का उल्लेखनीय हिस्सा यहां हाथ पर हाथ धरे पूंजीवादी एकतन्त्र के भयंकर दमन-शोषण को, हिटलर के आगमन को नियति के समान भुगतने को तैयार बैठा है। इन हालात में आज यहां यह समझने और समझाने की आवश्यकता है कि पूंजीवादी जनतन्त्र और पूंजीवादी एकतन्त्र ही एक-दूसरे के विकल्प नहीं हैं। इन दोनों का, सम्पूर्ण पूंजीवादी व्यवस्था का क्रान्तिकारी विकल्प भी है और वह विकल्प मजदूर जनतन्त्र है। **मजदूरों के लिये दुख-दर्द से भरे देश की एकता-अखंडता विकास वाले पूंजीवादी जनतन्त्र-पूंजीवादी एकतन्त्र के मुकाबले मजदूर जनतन्त्र की स्थापना के लिये पुलिस फौज समाप्त कर और देशों की दीवारों को तोड़ते हथियार बन्द मजदूर अपनी ही नहीं बल्कि समस्त मानवों की खुशहाली की राह खोल सकते हैं।** इसलिए दुनिया में हंसी-खुशी भरे खुशहाल समाज के निर्माण के लिए आइए पूंजीवाद के विकल्प में मजदूर जनतन्त्र की स्थापना के लिए काम करें।

—o—

हमारे लक्ष्य हैं:— 1. मौजूदा व्यवस्था को बदलने के लिये इसे समझने की कोशिशें करना और प्राप्त समझ को ज्यादा से ज्यादा मजदूरों तक पहुंचाने के प्रयास करना। 2. पूंजीवाद को दफनाने के लिए जरूरी दुनियां के मजदूरों की एकता के लिये काम करना और इसके लिये आवश्यक विश्व कम्युनिस्ट पार्टी बनाने के काम में हाथ बटाना। 3. भारत में मजदूरों का क्रान्तिकारी संगठन बनाने के लिये काम करना। 4. फरीदाबाद में मजदूर पक्ष को उभारने के लिये काम करना।

समझ, संगठन और संघर्ष की राह पर मजदूर आन्दोलन को आगे बढ़ाने के इच्छुक लोगों को ताल-मेल के लिये हमारा खुला निमन्त्रण है। बातचीत के लिये बेझिझक मिलें। टीका टिप्पणी का स्वागत है—सब पत्रों के उत्तर देने के हम प्रयास करेंगे।

संपर्क—मजदूर लाइब्रेरी, आटोचिन झुग्गी, बाटा चौक के पास, एन. आई. टी. फरीदाबाद 121001

मार्क्सवाद

(दसवीं किस्त)

पशुपालन के साथ मानव श्रम ने अपनी लागत से अधिक उत्पादन की क्षमता हासिल की । इससे एक सम्भावना दूसरों के शोषण की भी पैदा हुई । यह सम्भावना वास्तविक बनी । मानव समाज बट गया । स्वामियों और दासों के रूप में शोषक और शोषित मनुष्यों वाली स्वामी व्यवस्था उत्पन्न हुई । वर्ग विहीन से वर्ग समाज के बनने की भौतिकवादी व्याख्या का प्रयास हमने पिछले अंक में किया था । यहाँ हम स्वामी समाज में हुए कुछ उल्लेखनीय परिवर्तनों की भौतिकवादी व्याख्या की कोशिश करेंगे ।

सामुदायिक सम्पत्ति के स्थान पर निजी सम्पत्ति का विकसित होना और पुरुषों की तुलना में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति का बहुत गिर जाना स्वामी व्यवस्था की उल्लेखनीय घटनाओं में हैं ।

स्वामी व्यवस्था के आरम्भ में सम्पदा का मालिक सम्पूर्ण कबीला होता था । पशु और दास सम्पूर्ण कबीले की सम्पत्ति होते थे । सांझी सम्पदा वाले शोषकों का संगठन स्वामी गण कहलाता था । सब स्वामियों में बराबरी थी । दासों को तो स्वामी समाज में मनुष्य ही नहीं माना जाता था, दासों को नागरिक नहीं माना जाता था । लुटेरों की आपसी बराबरी वाली वह व्यवस्था रिपब्लिक [गणतन्त्र] पुस्तक के लेखक यूनानी दार्शनिक प्लेटो और समता के झंडाबरदार गौतम बुद्ध के लिए आदर्श व्यवस्था थी ।

स्वामी गण की सांझी सम्पदा के स्थान पर समय के साथ स्वामी व्यवस्था में निजी सम्पत्ति विकसित हुई । अमीर और गरीब स्वामी तो बने ही, बात यहाँ तक पहुंची कि स्वामी गण के सदस्यों में से भी दास बनाये जाने लगे । आदिम साम्यवादी दौर की कबीलों वाली गण-गोत्र व्यवस्था जो कि स्वामी समाज व्यवस्था के आरम्भ में स्वामी गण के रूप में सशक्त थी वह छिन्न-भिन्न होने लगी । इसकी जड़ में क्या था ?

प्रत्येक स्वामी गण पालतु पशुओं-दासों-चरागाहों के लिए आस-पास के स्वामी गणों तथा आदिम साम्यवादी गणों से लड़ते थे । गायों की चोरी के काफी किस्से शास्त्रों में हैं । वास्तव में पालतु पशु तथा दास संचित श्रम के रूप हैं और चरागाहों में भी देख-भाल, रख-रखाव के साथ संचित श्रम का पहलू प्रमुख बनता गया । कन्द-मूल बटोरने और शिकार की अवस्थाओं में मानव श्रम अपनी लागत भी मुश्किल से पैदा कर पाता था इसलिए अतिरिक्त श्रम जिसे संचित किया जा सके वह बहुत ही कम था । पशुपालन के साथ बढ़ी मानव श्रम की उत्पादकता ने उल्लेखनीय मात्रा में अपनी लागत से अधिक उत्पादन करने की क्षमता हासिल की । अतिरिक्त श्रम जिसे संचित किया जा सकता था वह समाज में उल्लेखनीय बना । पशुओं को मार कर खाने की बजाय उन्हें पालतु बनाने के लिए किया गया मानव श्रम इस प्रकार पालतु पशुओं के रूप में संचित होने लगा । एक पालतु पशु पर किया जाने वाला श्रम एक जंगली पशु पर किये जाने वाले श्रम से अधिक उत्पादक होता है—संचित श्रम सजीव श्रम को उत्पादक/अधिक उत्पादक बनाता है । राजनीतिक अर्थशास्त्र में संचित श्रम को मृत श्रम भी कहते हैं ।

सजीव श्रम को उत्पादक/अधिक उत्पादक बनाने की संचित श्रम की यह भूमिका थी जो कि पालतु पशुओं, दासों, चरागाहों के रूप में संचित श्रम को हासिल करने के लिए स्वामी गणों के युद्धों का मूल कारण थी । और यह संचित श्रम की समाज में बढ़ती भूमिका थी जिसने स्वामी समाज के गण रूप के स्थान पर निजी सम्पत्ति को स्थापित किया । आदिम साम्यवादी समाज में लम्बे दौर तक कबीले के मुखिया को आदर-सम्मान के लिए भेंट की जाती वस्तुओं में ऐसे संचित श्रम की मात्रा बहुत कम होती थी जिससे उत्पादकता पर असर पड़े; इसलिए वे मात्र आदर सम्मान की सूचक थी । पशुपालन के साथ संचित श्रम के बढ़ते महत्व ने जहां आदिम साम्यवादी कबीलों में स्वामी गणों को जन्म दिया और स्वामी समाज व्यवस्था का आधार रखा था, वहीं स्वामी व्यवस्था के गण रूप के बिखरने में भी संचित श्रम की भूमिका मुख्य थी । मुखियों को भेंट में दिए जाने वाले पालतु पशु और दास संचित श्रम के भण्डार थे । मुखियाओं के पास पालतु पशुओं और दासों की बढ़ती मात्रा ने उनकी सामाजिक पोजीशन में क्वालिटी का फर्क किया—संचित श्रम के भण्डार के निजी मालिकाने के इस प्रकार उदय ने स्वामी गण के अन्य सदस्यों की तुलना में मुखियाओं की शक्ति बहुत अधिक बढ़ाई । पालतु पशुओं, दासों और चरागाहों के लिए चली युद्धों की शृंखला ने मुखिया-सेनापति की भूमिका के महत्व को बढ़ाया । आदर-सम्मान की सूचक भेंटें बढ़ती शक्ति के श्रोत बनीं और स्वामियों में बड़े-छोटे स्वामी बनने का सिलसिला आरम्भ हुआ । स्वामी गण के सदस्यों में ही बिना दासों वाले बराये नाम के स्वामी और हजारों गाय व सैकड़ों दास-दासियों वाले स्वामी बने । हमारे दास की जगह मेरे दास की स्थिति वास्तविक बनी । निजी सम्पत्ति ने सामुदायिक सम्पत्ति का स्थान लिया ।

अगले अंक में हम स्त्रियों की स्थिति में हुए परिवर्तन पर विचार करेंगे ।

(जारी) —ओ

—o—

केल्वीनेटर में हलचल

केल्विनेटर फरीदाबाद की जानी-मानी फैक्ट्रियों में है । भारत में बनने वाले रेफ्रिजरेटरों का चालीस प्रतिशत यहां बनता है । पिछले साल 5 लाख 92 हजार रेफरिजरेटर बेचने वाली यह कम्पनी आजकल जोर-शोर से प्रचार कर रही है कि उसने इस साल एक महीने में ही एक लाख रेफरिजरेटर बेच दिए हैं ···· और इधर अप्रैल माह में आवाज उठा रहे मजदूरों को सस्पैन्ड करने की मुहिम चला कर मैनेजमेंट ने अस्सी मजदूर सस्पैन्ड कर दिए हैं तथा हर रोज सस्पैन्ड मजदूरों की संख्या बढ़ रही है ।

असल में रेफ्रिजरेटर बनाने वाली कम्पनियों की होड़ में केल्विनेटर के आगे होने का मुख्य कारण यहाँ मजदूरों का बुरी तरह निचोड़ा जाना है । केल्विनेटर कम्पनी की दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की और कम वेतन तथा ज्यादा वर्क लोड से केल्विनेटर के मजदूरों की परेशानी एक ही सिक्के के दो पहलू हैं ।

कम वेतन और ज्यादा वर्क लोड से परेशान केल्विनेटर के मजदूर काफी समय से सूखी बारूद के समान हैं । 1989 में इन मजदूरों ने पुराने लीडरों की जगह नये लीडर चुन कर अपनी समस्याएं हल करने की कोशिश की थी पर रिजल्ट वही ढाक के तीन पात रहा । आजकल केल्विनेटर मजदूरों में यह सोच हावी है कि अन्दर की यूनियन की जगह बाहर की यूनियन को मैनेजमेन्ट से मान्यता दिलाने पर उन्हें परेशानियों से मुक्ति मिल जायेगी । आजकल सस्पैन्ड की लहर इसी खींचा-तान में चल रही है ।

असल में पुरानों की जगह नये लीडर चुनना या अन्दर की जगह बाहर की यूनियन लाना बीमार पर नहीं बल्कि बीमारी के लक्षणों पर चोट करने के समान है । अपने में तीस मार खां बने लोगों की हकीकत को केल्विनेटर के मजदूर 1989 की एग्रीमेंट में भुगत चुके हैं । फिर ठोकर खाने से बचने के लिए उन्हें फरीदाबाद की उन फैक्ट्रियों के मजदूरों से बात-चीत करनी चाहिए जो कि बाहर के तीस मार खाओं के करमों को भुगत चुके हैं, भुगत रहे हैं । असल में ऐसा कोई मसीहा या महाबलि नहीं है जो कि मजदूरों की समस्यायें दूर करेगा । मजदूरों की सामुहिक ताकत ही उन्हें पूंजी के नुमाइन्दों से टक्कर लेने लायक बनाती है । लेकिन आज बिचौलिया संस्कृति मजदूरों में इस कदर हावी है कि मजदूर अपनी ताकत नहीं पहचानते और अपने को असहाय मान कर बिचौलियों को अपनी किस्मत का फैसला करने का अधिकार दे देते हैं । इसके रिजल्ट हम सब भुगत रहे हैं । मजदूरों के हित में संघर्ष को मजबूत बनाने के लिए केल्विनेटर के मजदूरों से विचार-विमर्श का हम स्वागत करेंगे ।

—o—

(पहले पेज का शेष)

की छटनी के लिए अब जाल बुन लिया है । इधर पचास मजदूर झगड़े के नाम पर डिसमिस कर भी दिए है । जाहिर है कि असल बीमारी तो यह पूंजीवादी व्यवस्था है जहाँ मजदूरों की रोजी-रोटी-जिन्दगी से सट्टा खेलना पूंजी के नुमाइन्दों का रोज का काम है ।

एक नजर 21 मार्च और उसके बाद के घटनाक्रम पर डालें । 21 मार्च को फैक्ट्री में हुई मार-पीट उकसावे बाजी का नतीजा लगती है । और चूंकि फायदा मैनेजमेंट को, विशेषकर डिग्रीधारी साहबों को था इसलिए उकसावेबाज थामसन मैनेजमेन्ट लगता है । साढ़े चार बजे के करीब झगड़े के बाद दो शिफ्टों के डेढ़ हजार मजदूर फैक्ट्री में हो गये थे । एच एम एस से जुड़े एस्कोर्टस यूनियन के एक लीडर और थामसन यूनियन लीडरों ने मजदूरों से कहा कि मैनेजमेन्ट फैक्ट्री में ताला लगायेगी इसलिए अपने-अपने घर चले जाओ और अगले दिन सुबह दस बजे यूनियन दफ्तर पर मिटिंग होगी । रात दस बजे तक फैक्ट्री खाली हो गई 22 मार्च की मीटिंग में यूनियन लीडरों ने यह कहा कि 21 की रात मैनेजमेन्ट फैक्ट्री से सामान निकाल ले गई इसलिए मजदूर फैक्ट्री की चौकीदारी करें ताकि मैनेजमेन्ट फिर ऐसा न करे 21 मार्च की तालाबन्दी के बाद से मई के आरंभ तक एक भी जलूस या जलसा इस सबन्ध में नहीं हुआ है । घटनाक्रम थामसन मजदूरों को ना समझी और मैनेज मेन्ट-बिचौलिया मिलिभगत दर्शा रहा है ।

हमने अपने अप्रैल अंक में लिखा था "इस बार न बड़े-बड़े अखबार बड़ी-बड़ी खबरें दे रहे हैं, न बड़े लीडर भाषण करने फैक्ट्री गेट पर आ रहे हैं, दिसंबर 90 में पूंजीवादी सरगनों, देवीलाल—चौटाला और थामसन मैनेजमेन्ट के झगड़े के समय इस बार हालत बिल्कुल भिन्न हैं । इस बार मामला मजदूरों और मैनेजमेन्ट के बीच है ।" **और मामला बड़े पैमाने पर थामसन मजदूरों की छटनी का लगता है । ऐसे में मैनेजमेंट के खिलाफ अपनी ताकत बढ़ाने के लिए कदम नहीं उठाना और हाथ पर हाथ धरे मैनेजमेंट के हमले का इन्तजार करना मजदूरों की बरबादी की राह है । मामला गम्भीर है ।** थामसन प्रेस के मजदूरों से विचार-विमर्श का हम स्वागत करेंगे ।

—o—

स्वत्वाधिकारी व सम्पादक शेरसिंह द्वारा आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद से प्रकाशित व अलकनन्दा प्रिंटिंग प्रेस C-III/206, सं. गां. मेमो. न. से मुद्रित